बीजामृत
कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 84–85

बीजामृत

विनय, विवेक सेहरा एवं मुदित त्रिपाठी
(पी.एच.डी. शोधार्थी)
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, नैनी कृषि संस्थान
सैम हिग्गिन बोटोम कृषि तकनीकि एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत।
Email Id: doodwalvinay@gmail.com

बीज, पादप जीवन का मुख्य आधार है, जो एक संतति से दूसरी संतति तक जीवन वाहक कार्य करता है। पौधे का जीवन चक्र बीज से प्रारंभ होकर बीज में ही समाप्त हो जाता है। अतः बीज का स्वस्थ होना अति आवश्यक है, ताकि वह स्वस्थ संतति को कायम रख सके। यदि बीज ही रोगाणुओं से ग्रसित हो जाएंगे तो उससे उगने वाला पौधा अस्वस्थ, रोगग्रस्त, कमजोर, औज रहित व किसानों के लिये अलाभकारी सिद्ध होंगे। बीज पर रोगाणु व कीट अत्यधिक आक्रमण करते हैं, क्योंकि बीज में प्रायः सभी पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जिसका उपयोग कर ये अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं इसलिये बीजों को स्वस्थ रखने के लिये बीजों के भंडारण एवं वर्धन काल में कीट एवं रोगों से बचाकर आगे के फसल समय में रोगों के आक्रमण से बचाया जा सके और बीज स्वस्थ हो जाए।

भारत में किसानों के पास पहुचने वाला लगभग दो तिहाई बीज अनुपचारित होता है। बहुत कम ऐसे किसान होते हैं जो स्वंय बीज को उपचारित करते हैं। अर्थात भारत में अधिकतर फसलें अनुपचारित बीजों के द्वारा बोई जाती हैं। अनुपचारित बीजों में हानिकारक कीटों और जीवाणुओं के कारण बीज जनित संक्रमण का खतरा होता है, अर्थात बीज पौधा बनने से पहले ही संक्रमित होता है जिस कारण बीज काअंकुरण प्रतिशत और शक्ति कमहोती है और फसल उत्पदान कम होने से किसान की आकदनी भी कम होती है।यदि बीजों को खेत में डालने से पहले ही उनको संक्रमणसेमुक्त कर दिया जाता है तो वे प्रफुल्लता से विकसित होंगे और अन्न के भण्डार से हमें परिपूर्ण करेंगे। बीजों को संक्रमणसेमुक्त करने के लिए उन्हें खेत में बोने से पहले उपचारित कर लें तो अच्छी पैदावार होगी। बीजों को बीज जनित संक्रमण के कारण उत्पन्न होने वाले तनाव से मुक्त करने के लिए उपचारित किया जाता है। बीजोपचार के लिए रासायानिक, यान्त्रिक और पारंपरिक/स्वदेशी विधियाँ प्रचलित हैं। शोध बताते हैं कि स्वदेशी विधियों से बीजोपचार से बेहत्तर फसल उत्पादन होता है। ये स्वदेशी पद्धतियाँ अन्य की तुलना में कम खर्चीली, सुरक्षित व पर्यावरण के अनुकूल होती हैं और इनमें उपयोग किये जाने वाले पदार्थ आसानी से मिल जाते हैं। इन स्वदेशी पद्धतियों में से एक है 'प्राकृतिक खेती' के अंतर्गत 'बीजामृत'। यदि बीजामृत को बीजों काअमृत कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि इससे बीजोपचार करने से बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ने के साथ–साथ किसान का बहुत–सा धन अपव्यय

होने से बच जाता है। बीजामृत को किसान अपने घर या खेत पर आसानी से तैयार कर सकता है। बीजामृत से बीजोपचारित करने के निम्नलिखित लाभ है–

- बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ती है।

- बीज कीजल्दी से सुसुप्तावस्था टूटती है।
- बीजों में वृद्धि निरोधक समाप्त होते हैं।
- बीजों में एक समान अंकुरण होता है।
- प्रारम्भिक अवस्था से ही मौसमी कीटों और रोगों से बचाव होता है।
- स्वस्थ पौधे उगते हैं।

बीजामृत निम्नलिखित सामग्री से बनता है –

1	देशी गाय का गोबर	1 कि.ग्रा
2	देशी गाय का मूत्र	1 लीटर
3	चूना या कली	10 ग्राम
4	हल्दी पाउडर	5 ग्राम
5	गुड	100 ग्राम
5	पानी	4 लीटर
6	पेड़ के नीचे की मिट्टी	एक मुट्ठी

बीजामृत तैयार करने की विधि :

चरण 1: 5 किग्रा गाय के गोबर को एक कपड़े मेंलें और टेप का उपयोग कर इसे बांध दें। कपड़े को 20 लीटर पानी में 12 घंटे के लिए लटका दें।

चरण 2: साथ ही एक लीटर पानी लें और उसमें 50 ग्राम चूना मिलाकर रात भर के लिए रख दें।

चरण 3: अगली सुबह, बंडल को पानी में तीन बार लगातार निचोड़ें, ताकि गाय के गोबर के महत्वपूर्ण तत्व पानी में मिल जाएं।

चरण 4: एक मुट्ठी मृदा को लगभग 1 किलोग्राम जल मिश्रण में मिलाएं और अच्छी तरह से मिलाएँ।

चरण 5: मिश्रण में देसी गाय का 5 लीटर मूत्र और चूना पानी मिलाएं और अच्छी तरह से मिलाएँ।

बीजामृत का उपयोग इस प्रकार करें :

1. **घास वर्गीय फसल (जैसे कि धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी इत्यादि) :** इनमें से चयनित फसल के बीज को फर्श या देशी गाय के गोबर से लिपी हुई भूमि पर फैला कर आवश्यकतानुसार बीज पर बीजामृत छिड़कें। बीज को दोनों हाथों से मल कर छाया में सुखा कर बीज बोएं।
2. **दलहन:** दलहन के बीजों का छिलका पतला होने के कारण हाथों से रगड़ने पर निकल जाता है। चयनित बीज को फर्श पर फैला कर आवश्यकतानुसार बीजामृत छिड़कें। दोनों हाथों की उंगलियाँ फैलाकर बीजों को धीरे से ऊपर–नीचे करके मिलाएं। छाया में सुखा कर बीज बोएं।
3. **मूँगफली/सोयाबीन :** इनके छिलके बहुत पतले एवं संवेदनशील होते हैं इनके बीज लें और उसके 10: 1 कीमात्रा में बीजवबीजामृत लेकर धीरे से मिलाएं।
4. **सब्जियाँ:** पैकेट से बीज को निकाल कर ठण्डे पानी से धो कर बीजामृत से उपचारित कर छाया में सुखा कर बिजाई करें।
5. **फलों के बीज:** फलों के बीजों को भी सामान्य तरीके से बीजामृत से उपचारित करें।
6. **कलम :** चयनित कलमों को बाँस की टोकरी में रख कर बीजामृत में डुबो कर रोपाई करें।
7. **पौध:** पौधशाला से पौधे निकाल कर उनकी जड़ों को बीजामृत में डुबो कर रोपाई करें।

उपचारित बीज के फायदे

बीजामृत से उपचारित बीजों को पक्षी नहीं खातेहै और लेप होने से कई दिनों तक नमी बनी रहती है इस लिए फुटान ज्यादा होता है। दूसरी ओर अगर बिजाई के तुरंत बाद सूखा पड़ जाए तो बीज में फुटान नहीं होता परन्तु बीज सुरक्षित रहता है और पानी मिलने पर उग जाता है। इसलिए उपचारित बीज बोने पर दुबारा बीज बोने की नौबत नहीं आती है।